**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1346-1348**

# यशपाल की रचनाओं में राष्ट्रीयता

**डॉ0 राजकुमार**
Lecturer in Hindi, Department of Education, GSSS Samargopal Pur, Rohtak, Haryana, India

**सारांश**
यशपाल स्वाधीनता–संग्राम में क्रांतिकारी धारा के अग्रणी योद्धा और लेखक रहे। कहा जाता है कि यशपाल जी उन साहित्यकारों में हैं, जो कलम और तलवार चलाने में समान सफलता प्राप्त कर चुके हैं। यशपाल की दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य मानव जीवन का विकास करना है। समस्या से मुक्ति पाने के लिए ही क्रांति का उद्भव होता है। क्रांति की यह भावना प्रथम उपन्यास 'दादा कामरेड' से अद्भुत होती है, अन्तिम उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' में फलीभूत होती है।

**मूल शब्द :** विप्लव :– क्रांति, वीभत्सता :– भयानकता, पर्दाफ़ाश :– उजागर करना, त्रासदी :– दूर्घटना।

## प्रस्तावना

### राष्ट्रीयता का अर्थ और अभिप्राय

अनेक राजनीतिक चिंतकों, इतिहासकारों और साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता जैसे गंभीर तत्त्व पर सूक्ष्म विचार कर उसके तात्पर्य को स्पष्ट किया है और उसकी अर्थपरक परिभाषाएँ भी दी हैं। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण विचारों को जानना यहाँ प्रासंगिक है।

### (क) जे0 एच0 रोज के अनुसार राष्ट्रीयता की परिभाषा

'दिलों की एक ऐसा एकता, जो एक बार बनकर कभी न बिगड़े।' राष्ट्रवाद एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जिसे मिटाया नहीं जा सकता। यह प्रेरणामूलक है। इसकी जड़ मनुष्य की सामाजिक भावना और कबायली मनोवृत्ति में है।[1]

### (ख) गिलक्राइस्ट के मतानुसार

'राष्ट्रीयता का अभिप्राय उस आध्यात्मिक भावना से है, जो उस जनसमुदाय में पाई जाती है, जिसके सदस्य एक मूल वंश के हों, एक ही भूखंड पर निवास करेते हों, एक ही धर्म के अनुयायी हों, जिनका इतिहास और परंपराएँ समान हों, जिनके आर्थिक हित समान हों और जो राजनीतिक एकता के समान आदर्श रखते हों।'[2]

### (ग) इन साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार

राष्ट्रीयता वह मनः स्थिति है, जिसमें व्यक्ति की सर्वोच्च निष्ठा राष्ट्र अथवा राज्य के प्रति उन्मुख है। संपूर्ण इतिहास में मातृभूमि, पैतृक परंपरा तथा स्थिर सत्ता के प्रति भक्ति, विभिन्न मात्रा में शक्ति प्रदान करने वाली प्रमुख भावनाओं के रूप में विद्यमान रही है।[3]

### यशपाल की रचनाओं में राष्ट्रीयता

आधुनिक हिंदी जगत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल का जन्म फिरोजपुर छावनी के एक खत्री परिवार में हुआ था। उस समय देश में विदेशी शासन के विरोध में चल रहा आंदोलन अपना उग्र रूप धारण कर रहा था। कॉलेज से शिक्षा–प्राप्ति के दिनों में ही उनका संपर्क सुखदेव, भगतसिंह, भगवतीचरण और दूसरे साथियों से हुआ। सशस्त्र क्रांतिकारियों के साथ रहना ही केवल उनका उद्देश्य नहीं था, वरन् वे उनके हर काम में हाथ बँटाना चाहते थे। क्रांति और साहित्य के बीच साहित्य अधिक प्रिय होने पर भी यशपाल क्रांति के पथ पर अग्रसर हुए। वे सन् 1926 ई0 में गरम दल के साथ स्वतंत्रता–संग्राम के आंदोलन में कूद पड़े। उनके क्रांतिकारी कार्यों के पीछे एक विचार–दर्शन था। मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत उसका उद्देश्य था।

यशपाल स्वाधीनता–संग्राम में क्रांतिकारी धारा के अग्रणी योद्धा और लेखक रहे। कहा जाता है कि यशपाल जी उन साहित्यकारों में हैं, जो कलम और तलवार चलाने में समान सफलता प्राप्त कर चुके हैं। सन् 1940 ई0 में अपने क्रांतिकारी विचारों वाले लेखों के कारण उन्हें गिरफ्तार किया गया। सन् 1941 ई0 में जेल से बाहर आए, पर हृदय में देशप्रेम की आग धधक रही थी। उन्होंने सन् 1943 ई0 में 'देशद्रोही' उपन्यास की रचना की।

यशपाल एक समग्र लेखक माने जाते हैं। उपन्यास, कथा, निबंध, नाटक, यात्राविवरण, संस्मरण, पत्रकारिता आदि हिंदी साहित्य का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें उनका प्रवेश न हो। उनके विपुल रचना–संसार में मुख्य रूप से कथाभूमि के अंतर्गत 'दिव्या', अमिता और अप्सरा का शाप' जैसे उपन्यास आते हैं। 'झूठा सच' उपन्यास उनकी लेखन–साधना का चरमबिंदु रहा, जो विश्वसाहित्य में चर्चित हुआ। इसके विषय में स्वयं यशपाल की प्रारंभिक टिप्पणी है– 'झूठा सच के दो भागों–'वतन और देश' तथा 'देश का भविष्य' में देश का भविष्य' में देश के सामयिक और राजनीतिक वातावरण को यथासंभव ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित करने का यत्न किया गया है। उनका उपन्यास 'मनुष्य के रूप' सभी भारतीय भाषाओं में प्रतिबिंबित हुआ। 'अमिता' उपन्यास को युनेस्को ने अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद के लिए चुनकर विश्व मान्यता प्रदान की। उनका उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुआ।

यशपाल गांधी जी की नीतियों के विरोधी थे। उनका रास्ता कॉंग्रेस से बिल्कुल अलग था। यशपाल का कथन है– 'क्रांति से हमारा अभिप्राय केवल जनता और विदेशी सरकार में सशस्त्र संघर्ष ही नहीं है। हमारी क्रांति का लक्ष्य एक नवीन न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था है। इस क्रांति का उद्देश्य पूँजीवाद को समाप्त करके श्रेणीहीन समाज की स्थापना करना तथा विदेशी और देशी शोषण के हाथ से शासनशक्ति लेकर मजदूर श्रेणी के शासन की स्थापना

करना है।[4] 'विप्लव' पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर छपने वाली ये पंक्तियाँ उनके विचारों का संकेत देती हैं–

तुम करो शांति–समता प्रसार,
विप्लव! अपना अमर गान!

उनके शब्दों में विप्लव मनुष्य और समाज की जीवन–शक्ति का स्रोत है।[5]

धार्मिक पाखंड राष्ट्रीय चेतना के विकास के रास्ते का सबसे बड़ा रोड़ा है। यह यशपाल ने समझा था और तभी उन्होंने कहा, 'जब तक यह मजहब को मुलम्मा, चाहे वह कट्टरता का मुलम्मा हो, चाहे सहिष्णुता का हल्का मुलम्मा हो, उस पर चढ़ा रहेगा, हम आदमी के रूप में न पहचाने जाएँगे, न दूसरों को पहचान सकेंगे। न हमारी राष्ट्रीयता वहाँ पनप सकेगी, न ही राष्ट्रीयता के उस उद्देश्यों की ओर एक भी क़दम बढ़ सकेंगे, जिसका हम इतना ढोल पीट रहे हैं।[6] यशपाल की जीवन–शक्ति का स्रोत जनता थी। यशपल की दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य मानव–जीवन का विकास करना है। समस्या से मुक्ति पाने के लिए क्रांति का उद्भव होता है। उनके उपन्यासों में क्रांति की चेतना का क्रमिक विकास देखा जा सकता है। क्रांति की यह भावना प्रथम उपन्यास 'दादा कामरेड' से उद्भूत होती है, मध्य के उपन्यासों में विकसित होती है और अंतिम उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' में फलीभूत होती है। आरंभ में आंतकवाद से साम्यवाद की ओर, फिर साम्यवाद से समाजवाद की ओर और अंत में समाजवाद से राष्ट्रीय युवापीढ़ी की ओर उनकी आस्था बढ़ती है। अतः स्पष्ट है कि यशपाल किसी विशेष वाद से बँधे हुए नहीं रहे। राष्ट्रीय और सामाजिक क्रांतियों के लिए उन्होंने युग के सभी प्रभावों को स्वीकार किया है। इस आधार पर वे एक प्रगतिवादी साहित्यकार हैं।

सन् 1942 ई0 की राष्ट्रीय क्रांति को 'देशद्रोही' उपन्यास में आत्मरक्षा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। देश के राष्ट्रवादियों के लिए यह एक स्वर्णिम अवसर था। 'देशद्रोही' उपन्यास में क्रांति की चेतना के दो आयाम हैं – 'आजादी' और 'समाजवाद'। दोनों का लक्ष्य एक रहा, व्यापारी, पूँजीपति और मध्यवित्तीय बुद्धिजीवी आदि का संजीव और यथार्थ चित्रण किया है। 'देशद्रोही' यशपाल की क्रांतिकारी अभिव्यक्ति है। सन् 1958 ई0 और 1960 ई0 में क्रमशः दो भागों में प्रकाशित 'झूठा सच' उपन्यास हिन्दी साहित्य की अमर कलाकृति है। यह यशपाल की साहित्यिक प्रतिष्ठा का मुख्य आधार है। इसकी कथा दो भागों में बँटी हुई है – 'वतन और देश' तथा 'देश का भविष्य'। इसकी कथा मे भारत की आज़ादी, देश–विभाजन की त्रासदी, आज़ादी के बाद जनसेवा के नाम पर नेताओं द्वारा भ्रष्ट तरीकों के फैलाव, सांप्रदायिक गतिविधियों के उकसाव तथा मध्यवर्गीय रोमानी मनोवृत्तियों की विसंगतियों का चित्रण है। यह उपन्यास स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्रयोतर भारत की यथार्थ राजनीतिक स्थितियों को उघाड़ता है। प्रथम खंड के अनुसार देश के विभाजन को लेकर जो नरसंहार हुआ, वह सारी मानवजाति पर बहुत बड़ा कलंक है। अँधेरी रात में जहाँ–तहाँ जलती आग की तरह सांप्रदायिक दंगों की भयानकता और वीभत्सता के चित्रण में यशपाल की बराबरी और कोई नहीं कर सकता। सांप्रदायिक विद्वेष की आग में मानवीय संवेदनाएँ किस प्रकार मर जाती हैं और आदमी किस तरह जानवर बन जाता है, इसका बोध कराने में यशपाल को व्यापक सफलता मिली है। तभी 'झूठा सच' सांप्रदायिक नृशंसता का प्रामाणिक दस्तावेज बन गया है।

झूठा–सच के दूसरे खंड 'देश का भविष्य' में स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद के दशक में देश के विकास और भावी निर्माण में बुद्धिजीवियों और नेताओं की प्रगतिशीलता और साथ ही प्रतिगामी भूमिका का यथार्थ चित्रण किया गया है। प्रगतिशील शक्तियाँ निजी स्वार्थ और भोग–लालसा के लिए जनता के साथ विश्वासघात करती हैं। यशपाल केवल भ्रष्टाचार, बुराई और झुठ का पर्दाफ़ाश करके ही संतोष नहीं करते, वह एक बेहतर जीवन का स्वप्न भी देखते हैं। यशपाल के उपन्यासों में अंधकार के साथ उजाला भी है। उपन्यास का यह अंतिम संवाद आज भी अपना अर्थ रखता हे– 'जनता निर्जीव नहीं है। जनता मूक भी नहीं रहती। 'देश का भविष्य' नेताओं और मंत्रियों की मुट्ठियों में नहीं है, देश की जनता के हाथ में है।

सन् 1974 में प्रकाशित बृहत् उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' यशपाल की एक और कालजयी रचना है, जिसका उपशीर्षक है 'किसकी बलि?' लेखक ने अपने इस उपन्यास में जनवादी परंपरा का दायित्व पूरी तरह निभाया है। इस उपन्यास में राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की स्थितियों के साथ व्यापक जनचेतना को अंकित किया गया है। स्वतंत्रता–आंदोलन की कई घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए भी सन् 1942 ई0 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' उपन्यास का महत्त्वपूर्ण भाग है। यशपाल ने इस उपन्यास में जो राजनीतिक परिदृश्य अंकित करने का यत्न किया है, उसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि युवावर्ग ग़लत बातों पर समझौता नहीं करता है। उनके विचार में वे भावुकता के शिकार हो सकते हैं, पर अपने विचारों में उनको आस्था है। युवा पीढ़ी एक वर्गहीन समाज में स्वतंत्रता की आकांक्षा रखती है। परंतु आधुनिक त्रासदी में वह मोहभंग, विसंगति और विरूपता का अनुभव काती है। उपन्यास में समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब है, पर पृष्ठभूमि में ऐतिहासिक घटनाओं को लिया गया है। स्वतंत्रता–आंदोलन का वह गहमागहमी–भरा समय, जिसने पूरे समाज को आंदोलित किया था, इस उपन्यास में एक महानायक बनकर उभरता है। वह युग एक तरफ़ राजनीतिक हलचलों से भरा युग था और उसके प्रभाव भी दिख रहे थे। इस उपन्यास का युग आदर्शो की विजय का युग रहा है। कथाकार ने उस आदर्शवाद की ओर संकेत किया, जो एक विशेष राष्ट्रीय कार्यक्रम और प्रगतिशील विचारधारा के अंतर्गत उतारा गया आदर्शवाद है। यह उपन्यास रूप महागाथा के विकसित विचारों का प्रतीक है।

## निष्कर्ष

निश्चय ही यशपाल हिंदी साहित्य के एक संघर्षशी और क्रांतिकारी रचनाकार हैं। यशपाल की रचनाएँ एक बात का प्रमाण हैं कि कैसे क्रांति से एक ऐसे बड़े लेखक का जन्म होता है, जिसका संपूर्ण लेखन विचारधारा पर केंद्रित है। स्वयं क्रांतिकारी आंदोलन में सम्मिलित हुए बिना –'झुठा सच' और 'मेरी तेरी उसकी बात' जैसे उपन्यासों की रचना हो ही नहीं सकती थी। भारतीय क्रांति और क्रांति की विचारधारा ने ही उन्हें 'विचारधारा का लेखक' बनाया। वे राष्ट्रीय क्रांति के आंदोलन से निकले एक यथार्थवादी लेखक, उपन्यासकार और कथाकार के रूप में पहचाने गए। भीष्म साहनी ने अपने लेख 'यशपाल : नए संसार के अग्रदूत' में लिखा है– 'वह उस पौध के लेखक थे जिसमे एक ओर लेखक सामाजिक क्षेत्र में होने वाले जनसंघर्ष से जुड़ता है, दूसरी और उसी से उत्प्रेरित होकर अपना साहित्य रचता है। वह उस विराट अंतर्राष्ट्रीयवाद के लेखक थे, जो आज राष्ट्रीय हदबंदियों को तोड़कर उन मानव–संबंधों को वाणी देता है, जो विश्व के किसी भाग में न्याय और मानव–अधिकारों के लिए चलने वाले जनसंघर्ष से जुड़ता है। उसका संबल बनता है।'[7]

## संदर्भ


1. राजनीति सिद्धांत और शासन, कृष्णकांत मिश्र, पृ0 220–230
2. राजनीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, वी0 पी0 सिंह, पृ0 803–804
3. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, खंड 19, पृ0 149
4. इंद्रप्रस्थ भारती, यशपाल विशेषांक, वर्ष 15, अंक 4 (कमलेश्वर का लेख) पृ0 27
5. वही, पृ0 28
6. वही, पृ0 56–57 में 'मजहब का मुलम्मा' से उद्धृत
7. इंद्रप्रस्थ भारती, यशपाल विशेषांक वर्ष 15, अंक 4, पृ0 4